

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ
 وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ
 اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ
 فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيْحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ
 بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٤﴾ وَمِنَ النَّاسِ
 مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ
 وَالَّذِينَ ءَامَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرُونَ
 الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾ إِذْ
 تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوْا الْعَذَابَ
 وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾ وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا
 كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا كَذَلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ
 أَعْمَلَهُمْ حَسْرَاتٍ عَلَيْهِمْ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾

Theme	
Signs from nature to recognize Allah. The mushrikin will have severe punishment. The followers of misguided leaders will regret on the Day of Judgement.	कुदरत की निशानियों के ज़रिये अल्लाह को पहचानना। मुश्रिकीन के लिए सख्त अज़ाब है। गुमराह पेशवाओं के पैरोकार क़ियामत के दिन नदामत उठाएँगे।
Tarjumanī	

<p>Surely, in the creation of the heavens and the earth, in the alternation of the night and the day, in the sailing of the ships through the ocean for the profit of mankind, in the rain which Allah sends down from the skies, with which He revives the earth after its death and spreads in it all kinds of animals, in the change of the winds and the clouds between the sky and the earth that are made subservient, there are signs for rational people. From the mankind there are some who take for worship other deities besides Allah (mushrikeen), they love them as they should love Allah, whereas the believers are strong in love for Allah. If those who are unjust could visualize (the Day of Judgement) when they will see the chastisement, they would come to know for sure, that all powers belong to Allah and that Allah is stern in retribution. On that Day, those leaders who were being</p>	<p>(इस हक़ीकत को पहचानने के लिए अगर कोई निशानी और अलामत दरकार है तो) जो लोग अक्ल से काम लेते हैं उनके लिए आसमानों और ज़मीन की साख्त में, रात और दिन के पैहम एक दूसरे के बाद आने में, उन कश्तियों में, जो इनसान के नफ़े की चीज़ें लिए हुए दरियाओं और समुद्रों में चलती-फिरती हैं, बारिश के उस पानी में जिसे अल्लाह ऊपर से बरसाता है फिर उसके ज़रीए से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दगी बख़्शता है और (अपने इसी इन्तिज़ाम की बदौलत) ज़मीन में हर क़िस्म की जानदार मखलूक को फैलता है, हवाओं की गर्दिश में, और उन बादलों में जो आसमान और ज़मीन के दरमियान ताबे-फ़रमान बनाकर रखे गए हैं, बेशुमार निशानियाँ हैं। (मगर वहदते-खुदावन्दी पर दलालत करनेवाले इन खुले-खुले आसार के होते हुए भी) कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसका हमसर और मुद्दे-मुक़ाबिल बनाते हैं और उनके ऐसे गिरवीदा हैं जैसे अल्लाह के साथ गिरवीदगी होनी चाहिए— हालाँकि ईमान रखनेवाले लोग सबसे बढ़कर अल्लाह को महबूब रखते हैं— काश, जो कुछ अज़ाब को सामने देखकर</p>
--	--

<p>followed, when faced with their punishment, will renounce those who followed them and the bonds which united them will break asunder. The followers will say: "If it could be possible for us to live again, we would renounce them as they have renounced us today" Thus, Allah will show them the fruits of their deeds. They will sigh with regret, and shall not be able to come out of the Hell fire.</p>	<p>इन्हें सुझनेवाला है, वह आज ही इन ज़ालिमों को सूझ जाए कि सारी ताकतें और सारे इखातियारात अल्लाह ही के कब्जे में हैं और यह कि अल्लाह सज़ा देने में भी बहुत सख्त है जब वह सज़ा देगा उस वक़्त कैफ़ियत यह होगी कि वही पेशवा और रहनुमा जिनकी दुनिया में पैरवी की गई थी, अपने पैरवों से बे-तल्लुकी ज़ाहिर करेंगे, मगर सज़ा पाकर रहेंगे और इनके सारे असबाब व वसाइल का सिलसिला कट जाएगा और वे लोग जो दुनिया में उनकी पैरवी करते थे, कहेंगे कि काश, हमको फिर एक मौक़ा दिया जाता तो जिस तरह आज ये हमसे बेज़ारी ज़ाहिर कर रहे हैं, हम इनसे बेज़ार होकर दिखा देते यूँ अल्लाह इन लोगों के वे आमाल, जो ये दुनिया में कर रहे हैं, इनके सामने इस तरह लाएगा कि ये हसरतों और पशेमनियों के साथ हाथ मलते रहेंगे मगर आग से निकलने की कोई राह न पाएँगे </p>
<p>Tafsir</p>	
<p>In the creation of the heavens and earth, and the alternation of the night and</p>	<p>आसमानों और ज़मीन की तख़लीक़ में, और रात और दिन के बदलने में, और उन कश्तियों में जो</p>

<p>day, and the ships which sail the seas to people's benefit, and the water which Allah sends down from the sky – by which He brings the earth to life when it was dead and scatters about in it creatures of every kind – and the varying direction of the winds, and the clouds subservient between heaven and earth, there are Signs for people who use their intellect. [2:164]</p>	<p>लोगों के फ़ायदे के लिए समंदरों में चलती हैं, और उस पानी में जिसे अल्लाह आसमान से नाज़िल करता है—जिसके ज़रिये वह मुर्दा ज़मीन को ज़िंदा करता है और उसमें हर किसम के जानदार फैला देता है—और हवाओं के रुख बदलने में, और उन बादलों में जो आसमान और ज़मीन के दरमियान ताबे-फ़रमान हैं, अक़ल रखने वालों के लिए निशानियाँ हैं। [2:164]</p>
<p>‘Atā’ said that when the previous āyah was revealed, the unbelievers of Quraysh said, “How can One God be enough for people!” Then this āyah was revealed. Sufyān related from his father that Abu-ḍ-Ḍuḥā said that when the previous āyah was revealed they asked, “What proof is there of this?” and so Allah revealed this āyah. It is as if they were asking for a sign to make the oneness of Allah clear to them: this universe and its wondrous structure must</p>	<p>अताअ ने कहा कि जब पिछली आयत नाज़िल हुई तो कुरैश के काफ़िरों ने कहा: “एक ख़ुदा लोगों के लिए कैसे काफ़ी हो सकता है?” फिर यह आयत नाज़िल हुई। सुफ़यान ने अपने वालिद से रिवायत किया कि अबू अद्-दुहा ने कहा कि जब पिछली आयत नाज़िल हुई तो उन्होंने पूछा: “इस की क्या दलील है?” तो अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। गोया वह इस बात की निशानी तलब कर रहे थे कि अल्लाह की वहदानियत उन पर वाज़ेह हो जाए: यह कायनात और इस की हैरतअंगेज़ साख़्त लाज़िमन किसी</p>

<p>have a Builder and Maker.</p>	<p>बनाने वाले और पैदा करने वाले की मुहताज है।</p>
<p><i>Samāwāt</i> (heavens) is in the plural because there are different types of heaven. Each heaven is different from all the other heavens. <i>Ard</i> (earth) is in the singular because there is only one earth. Allah knows best. The sign of the heavens is that they are elevated without support under them or above them. That indicates incomprehensible power. Then there are the sun, moon and stars which rise and set in them which are yet another sign of Allah's power. The sign of the earth consists of its seas, rivers, mines, trees, gentle terrain and rough terrain.</p>	<p>समावात (आसमान) जमअ में इस लिए आया है क्योंकि आसमानों की मुख्तलिफ़ अक्साम हैं, और हर आसमान दूसरे से मुख्तलिफ़ है। जबकि अर्ज़ (ज़मीन) वाहिद में इस लिए आई है क्योंकि ज़मीन एक ही है। अल्लाह ही बेहतर जानता है। आसमानों की निशानी यह है कि वह बग़ैर किसी सहारे के बुलंद हैं, न उनके नीचे कोई स्तंभ है और न ऊपर, और यह अल्लाह की नाक़्ाबिले इद्राक़ कुदरत की दलील है। फिर उनमें सूरज, चाँद और सितारे हैं जो तुलूअ व गुरूब होते हैं, और यह भी अल्लाह की कुदरत की एक और निशानी हैं। ज़मीन की निशानी उसके समंदर, दरिया, मादनियात, दरख्त, नरम ज़मीन और सख्त ज़मीन वग़ैरह हैं।</p>
<p>and the alternation of the night and day,</p>	<p>और रात और दिन के बदलने में,</p>
<p>as they come and go from where it is not known. It is said that their differentiation is in respect of the variable intensity of the light and darkness, and</p>	<p>जैसा कि वह आते और जाते हैं ऐसे मक़ाम से जिसका इल्म नहीं होता। कहा जाता है कि उनका फ़र्क़ रौशनी और तारीकी की शिद्दत में कमी-बेशी और उनकी मुद्दत के लंबा और छोटा</p>

<p>the variation in the length and shortness of each. 'layl' (night) is the plural of 'laylah'. 'Nahār' (day) denotes the time of light between dawn and sunset. The beginning of 'day' is sunrise; anything before it is not part of it. Tha'lab said that among the Arabs it begins with sunrise. Az-Zajjāj said in <i>Kitāb al-Anwā'</i> that the beginning of the day is the appearance of the sun.</p>	<p>होने के एतबार से है। लैल (रात) लैला की जमअ है। नहार (दिन) फ़ज़्र से गुरुब-ए-आफ़ताब तक रौशनी के वक़्त को कहते हैं। दिन की इब्तिदा तुलूअ-ए-आफ़ताब से होती है, इससे पहले का वक़्त इसमें शामिल नहीं। सअलब ने कहा कि अरबों के नज़दीक दिन तुलूअ-ए-आफ़ताब से शुरू होता है। अज़-ज़ज्जाज ने <i>किताब अल-अनवा</i> में कहा है कि दिन की इब्तिदा सूरज के ज़ाहिर होने से होती है।</p>
<p>Ibn al-Anbārī said that there are three categories of time. One category is pure night, which extends from sunset to the rising of dawn. A second category is pure day, which extends from sunrise to sunset. The third category is shared between night and day and it is between dawn and sunrise since some of the darkness of night is left with the beginning of the light of day.</p>	<p>इब्न अल-अनबारी ने कहा कि वक़्त की तीन क्रिस्में हैं। एक क्रिस्म ख़ालिस रात है जो गुरुब-ए-आफ़ताब से तुलूअ-ए-फ़ज़्र तक होती है। दूसरी क्रिस्म ख़ालिस दिन है जो तुलूअ-ए-आफ़ताब से गुरुब-ए-आफ़ताब तक होता है। तीसरी क्रिस्म वह है जो रात और दिन के दरमियान मुश्तरक है, और वह फ़ज़्र और तुलूअ-ए-आफ़ताब के दरमियान का वक़्त है, क्योंकि इसमें रात की कुछ तारीकी बाक़ी रहती है जबकि दिन की रौशनी का आगाज़ हो चुका होता है।</p>
<p>What is sound is that 'day' is from the rising of dawn until sunset as is related by Ibn Fāris</p>	<p>सही बात यह है कि दिन फ़ज़्र के तुलूअ होने से लेकर गुरुब-ए-आफ़ताब तक होता है, जैसा कि इब्न</p>

in *al-Mujmal*. That is indicated by what is confirmed in *Ṣaḥīḥ Muslim* that ‘Adī ibn Hātim said, “When it was revealed: ‘until you can clearly discern the white thread from the black thread of the dawn’ (2:187), ‘Adī said to the Prophet, “Messenger of Allah, I put two strings under my pillow, a white one and a black one, by which I recognise night from day.” The Messenger of Allah ﷺ said, “Your pillow is indeed wide! It is the blackness of night and the whiteness of day.” This ḥadīth shows that the day is from the rising of dawn until sunset. This *fiqh* is applied in oaths and rulings are connected to it. If someone swears that he will not speak to a person for a day (*nahār*) and then speaks to him before sunrise, he has broken his oath. According to the first view, he has not broken it. What the Prophet ﷺ said is the criterion for that. As for what is part of literal language and derived from the Sunnah is that day

फ़ारिस ने *अल-मुजमल* में बयान किया है। इसकी ताईद उस हदीस से होती है जो *सहीह मुस्लिम* में साबित है कि अदी बिन हातिम ने कहा: “जब यह आयत नाज़िल हुई: ‘*यहाँ तक कि तुम्हारे लिए फ़ज्र का सफ़ेद धागा सियाह धागे से वाज़ेह हो जाए*’ (2:187), तो मैंने नबी ﷺ से अर्ज़ किया: ‘या रसूलुल्लाह! मैंने अपने तकिए के नीचे दो धागे रखे, एक सफ़ेद और एक सियाह, जिनके ज़रिये मैं रात और दिन को पहचानता हूँ।” रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारा तकिया तो बहुत चौड़ा है! इससे मुराद रात की तारीकी और दिन की सफ़ेदी है।” यह हदीस इस बात पर दलालत करती है कि दिन फ़ज्र के तुलूअ से लेकर गुरूब-ए-आफ़ताब तक होता है। इसी फ़िक्ही उसूल को क़समों और दूसरे अहकाम में भी लागू किया जाता है। अगर कोई शख्स क़सम खाए कि वह एक दिन (नहार) तक किसी से बात नहीं करेगा और फिर तुलूअ-ए-आफ़ताब से पहले बात कर ले, तो उसने अपनी क़सम तोड़ दी होगी। पहले क़ौल के मुताबिक़ उसने क़सम नहीं तोड़ी होती। लेकिन नबी ﷺ का इरशाद ही इस मामले में मीयार है।

<p>begins with the whitening of the sky.</p>	<p>लुगावी और सुन्नत से माखूज़ मफ़हूम यही है कि दिन का आगाज़ आसमान के सफ़ेद होने (फ़ज़्र) से होता है।</p>
<p>and the ships which sail the seas to people's benefit,</p>	<p>और वह कश्तियाँ जो लोगों के फ़ायदे के लिए समंदरों में चलती हैं,</p>
<p>'Fulk' (ships) is a generic term for all watercraft. The meaning of the āyah is that Allah controls them so that they move on the surface of the water and float in spite of their weight. The first person to make one was Nūh, as Allah reports. Jibrīl showed him how to do it and he bequeathed that to everyone. A ship is like a bird, but it is reversed so that the sea is under it as the bird is in the air above. Ibn al-ʿArabī said that.</p>	<p>'फुल्क' (कश्तियाँ) हर किस्म के आबीय जहाज़ों के लिए एक उमूमी लफ़्ज़ है। आयत का मतलब यह है कि अल्लाह उनको इस तरह क़ाबू में रखता है कि वह पानी की सतह पर चलती और अपने वज़न के बावजूद तैरती रहती हैं। सबसे पहले इसे बनाने वाले नूह थे, जैसा कि अल्लाह ने बयान फ़रमाया है। जिब्रील ने उन्हें इसका तरीक़ा सिखाया और उन्होंने इसे लोगों तक पहुँचा दिया। कश्ती परिंदे की मानिंद है, लेकिन इसका मामला उल्टा है, इस तरह कि कश्ती के नीचे समंदर होता है जबकि परिंदा हवा में ऊपर होता है। यह बात इब्न अल-अरबी ने कही है।</p>
<p>This āyah and those like it indicate the permission to travel on the sea in general, for commerce or for acts of worship such as the ḥajj and jihād. In the Sunnah we find</p>	<p>यह आयत और इस जैसी दूसरी आयतें इस बात की दलील हैं कि समंदर के ज़रिये सफ़र करना आम तौर पर जायज़ है, चाहे तिजारात के लिए हो या इबादत जैसे हज और</p>

the ḥadīth of Abū Hurayrah: a man came to the Messenger of Allah ﷺ and said, “Messenger of Allah, we travel on the sea and carry a little water with us.” There is also the ḥadīth of Anas ibn Mālīk in the story of Umm Ḥarām transmitted by the imams, Mālīk and others. There are other ḥadīths to the same effect, such as what is related from him ﷺ by Bundār Muḥammad ibn Bashshār which contains clear evidence for men and women travelling by sea for jihād. If it is permitted to travel on it for jihād, it is even more appropriate for travelling on it for the obligatory ḥajj. It is related from ‘Umar ibn al-Khaṭṭāb and ‘Umar ibn ‘Abd al-‘Azīz that it is forbidden to travel on it, but the Qur’ān and Sunnah refute this view. If travelling on it had been disliked or not permitted, then the Prophet ﷺ would have forbidden it to those who said, “We travel on the sea.” This āyah and what is like it is a

जिहाद के लिए। सुन्नत में हमें अबू हुरैरा की हदीस मिलती है कि एक शख्स रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया और कहा: “या रसूलुल्लाह! हम समंदर में सफ़र करते हैं और अपने साथ थोड़ा पानी ले जाते हैं।” इसी तरह अनस बिन मालिक से उम्म हराम के वाक़िआ में हदीस मर्वी है जिसे इमाम मालिक वग़ैरह ने रिवायत किया है। इसी मफ़हूम की दूसरी अहादीस भी हैं, जैसे बुंदार मुहम्मद बिन बश्शार के तरीक़ से रिवायत, जिसमें मर्दों और औरतों के लिए जिहाद के मक़सद से समंदरी सफ़र की वाज़ेह इजाज़त मौजूद है। जब जिहाद के लिए इस पर सफ़र जायज़ है तो फ़र्ज़ हज के लिए इस पर सफ़र करना बदरजा-ए-औला ज़्यादा मुनासिब है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब और उमर बिन अब्दुलअज़ीज़ से यह भी मनकूल है कि उन्होंने इस पर सफ़र को नापसंद या ममनूअ करार दिया, लेकिन कुरआन व सुन्नत इस राय की तरदीद करते हैं। अगर समंदर का सफ़र मक़रूह या नाजायज़ होता तो नबी ﷺ उन लोगों को मना फ़रमा देते जिन्होंने कहा था: “हम समंदर में सफ़र करते हैं।” लिहाज़ा यह आयत और इस जैसी

<p>text.</p>	<p>दूसरी आयतें इस मामले में सरीह नस् हैं।</p>
<p>As for what the two ‘Umars said about that, it is based on being cautious and not endangering oneself in order to seek this world and amass it. That is not the case with obligations. Abū ‘Umar said that Mālik disliked women embarking on the sea for ḥajj and even more so for the sake of jihād. The Qur’ān and the Sunnah refute this, although some of the people of Basra said that Mālik disliked that because the ships in the Hijāz were small and people could not conceal themselves when answering the call of nature because of the lack of space and press of people in it. It was possible to travel by land from Madīnah to Makkah, and therefore Mālik disliked going by sea. However, there is nothing wrong in using the large ships that the people of Basra have. He said that the basic principle is that ḥajj is</p>	<p>जहाँ तक दोनों उमर (हज़रत उमर बिन खत्ताब और उमर बिन अब्दुलअज़ीज़) के क्रौल का ताल्लुक है, तो वह एहतियात पर मबनी है और इस बात पर कि दुनिया के हुसूल के लिए अपने आप को खतरे में न डाला जाए। यह हुक्म फ़राइज़ के मामले में नहीं है। अबू उमर ने कहा कि इमाम मालिक औरतों के लिए समंदर के ज़रिये हज के सफ़र को नापसंद करते थे, और जिहाद के लिए तो बदरजा-ए-औला ज़्यादा नापसंद करते थे। लेकिन कुरआन व सुन्नत इस की तरदीद करते हैं। अलबत्ता बसरा के कुछ लोगों ने कहा कि इमाम मालिक ने इसे इस लिए नापसंद किया क्योंकि हिजाज़ के जहाज़ छोटे होते थे और उनमें जगह की तंगी और लोगों के हुजूम की वजह से पर्दा मुमकिन नहीं होता था जब इंसान क़ज़ा-ए-हाजत के लिए जाता था। मदीना से मक्का तक ज़मीनी रास्ता मौजूद था, इस लिए इमाम मालिक समंदर के रास्ते को नापसंद करते थे। हालांकि बसरा के लोगों के बड़े जहाज़ों के इस्तेमाल में</p>

<p>obligatory for all those who can find a way to perform it, men or women, when the route is generally safe. There is no difference between land and sea in that respect.</p>	<p>कोई हरज नहीं है। उन्होंने कहा कि अस्ल उसूल यह है कि हज हर उस शख्स पर फ़र्ज़ है, मर्द हो या औरत, जो उस तक पहुँचने की इस्तिताअत रखता हो, जब रास्ता आम तौर पर महफूज़ हो। इस मामले में खुशकी और समंदर के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं है।</p>
<p>The Book and the Sunnah both provide evidence that it is permitted to travel on the sea for worship and for trade. It is a proof and a model, although the circumstances of people travelling on the sea vary. Many of those who travel on it find it easy and not difficult while others find it difficult and are weakened by it, like those afflicted by extreme seasickness, and are unable thereby to perform the obligation of hajj and similar obligations. The first individual is permitted to travel on it and the second is forbidden to do so.</p>	<p>किताब और सुन्नत दोनों इस बात पर दलालत करती हैं कि इबादत और तिजारत के लिए समंदर के ज़रिये सफ़र करना जायज़ है। यह एक दलील और नमूना है, अगरचे समंदर में सफ़र करने वालों के हालात मुख्तलिफ़ होते हैं। बहुत से लोग इस सफ़र को आसान पाते हैं और उन्हें कोई दुश्चारी नहीं होती, जबकि कुछ लोगों के लिए यह मुश्किल होता है और वह इससे कमज़ोर हो जाते हैं, जैसे वह लोग जो शदीद समंदरी बीमारी में मुबतला होते हैं और इस के बाइस हज और दूसरे फ़राइज़ अदा करने से आजिज़ हो जाते हैं। पहले शख्स के लिए इस पर सफ़र करना जायज़ है और दूसरे के लिए ममनूअ है।</p>
<p>There is no disagreement among the people of</p>	<p>अहले-इल्म के दरमियान इस बात पर कोई इख़िलाफ़ नहीं कि जब</p>

<p>knowledge that when the sea is rough, it is not permitted for anyone to embark on it nor to do so at times when it is generally unsafe. It is permitted to embark on it when it is generally safe.</p>	<p>समंदर तूफ़ानी हो तो उसमें सवार होना जायज़ नहीं, और न ही ऐसे औक़ात में जब आम तौर पर यह गैर-महफूज़ हो। अलबत्ता जब आम तौर पर सलामती हो तो उसमें सवार होना जायज़ है।</p>
<p>The words “to people’s benefit” in this phrase refer to benefit they have in trade or anything else which is proper for them. If people criticise the Qur’ān, saying, “Allah revealed in the Book: <i>‘We have not omitted anything from the Book’</i> (6:38), so where do we find food seasonings like salt, pepper and the like?” the reply is, “They can be found in Allah’s words: <i>‘to people’s benefit.’</i>”</p>	<p>इस जुमले में “लोगों के फ़ायदे के लिए” से मुराद वह फ़ायदे हैं जो लोगों को तिजारत या किसी भी जायज़ काम में हासिल होते हैं। अगर कोई कुरआन पर एतराज़ करे और कहे कि अल्लाह ने किताब में फ़रमाया: “हम ने किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी” (6:38), तो फिर नमक, मिर्च और इस जैसी चीज़ें कहाँ हैं? तो इसका जवाब यह है कि यह सब अल्लाह के इस क़ौल में शामिल हैं: “लोगों के फ़ायदे के लिए”।</p>
<p>and the water which Allah sends down from the sky –</p>	<p>और वह पानी जो अल्लाह आसमान से नाज़िल करता है—</p>
<p>This, of course, means the rain which brings the world to life and makes the plants grow and is conserved in it for use at other times. As Allah says: <i>“We lodged it firmly in the</i></p>	<p>इस से मुराद यक़ीनन बारिश है जो दुनिया को ज़िंदगी बख़्शती है और पौधों को उगाती है, और इसे ज़मीन में इस तरह महफूज़ कर दिया जाता है कि बाद के औक़ात में भी इससे फ़ायदा उठाया जा सके। जैसा कि</p>

<p>earth.” (23:18)</p>	<p>अल्लाह फ़रमाता है: “और हमने उसे ज़मीन में ठहरा दिया” (23:18)</p>
<p>and scatters about in it creatures of every kind –</p>	<p>और उसमें हर किसम के जानदार फैला देता है—</p>
<p>This means He separates them and spreads them out. The word <i>dābbah</i> (creatures) includes all animals. Some people say that this āyah excludes birds, but this is rejected because they too have feet for walking on the earth.</p>	<p>इस का मतलब यह है कि अल्लाह उन्हें जुदा करता है और फैला देता है। दाब्बह (जानदार) का लफ़्ज़ तमाम हैवानात को शामिल है। कुछ लोग कहते हैं कि इस आयत में परिंदे शामिल नहीं, लेकिन यह बात दुरुस्त नहीं क्योंकि उनके भी ज़मीन पर चलने के लिए पाँव होते हैं।</p>
<p>and the varying direction of the winds,</p>	<p>और हवाओं के रुख बदलने में,</p>
<p>Sending them as sometimes barren, sometimes fertilising, sometimes as freezing gales, sometimes helping, sometimes destroying, sometimes hot and sometimes cold, sometimes gentle and sometimes tempestuous. It is said that the expression refers to just their direction – north, south, east or west – and the way they veer from one to the other. It is said that it means that they move large ships with full loads as</p>	<p>उन्हें कभी बेअसर, कभी बारआवर बनाने वाली, कभी सख्त सर्द झोंके, कभी मददगार, कभी तबाहकुन, कभी गरम और कभी सर्द, कभी नरम और कभी तूफ़ानी बना कर भेजा जाता है। कहा जाता है कि इससे मुराद सिर्फ़ उनकी सिम्टें हैं— शुमाल, जुनूब, मशरिक या मगरिब— और उनका एक से दूसरे रुख की तरफ़ बदलना। यह भी कहा जाता है कि इससे मुराद यह है कि वह भारी भरकम और हल्के दोनों तरह के जहाज़ों को चलाती हैं और उनको</p>

<p>well as small ships and avert what will harm them. It is said to refer to their variation from season to season.</p>	<p>नुक़सान से बचाती हैं। और यह भी कहा गया है कि इससे मुराद मौसमों के लिहाज़ से उनकी तब्दीली है।</p>
<p>Abū Dāwud related that Abū Hurayrah reported that he heard the Messenger of Allah ﷺ say, “The wind (<i>rīḥ</i>) is part of the solace (<i>rawḥ</i>) given by Allah. It brings mercy and brings punishment. When you see it, do not curse it. Ask Allah for its good and seek refuge with Allah from its evil.” Ibn Mājah also transmitted this in his <i>Sunan</i> from Abū Bakr ibn Abī Shaybah from Yaḥyā ibn Sa‘īd from al-Awzā‘ī from az-Zuhrī from Thābit az-Zuraqā‘ī from Abū Hurayrah. It is also related that the Prophet ﷺ said, “Do not curse the wind. It is from the breath of the All-Merciful.” This means that Allah Almighty puts relief, refreshment and comfort in it. We find in <i>Ṣaḥīḥ Muslim</i> from Ibn ‘Abbās that the Prophet ﷺ said, “I was helped by the east</p>	<p>अबू दाऊद ने रिवायत किया है कि अबू हुरैरा ने बयान किया कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़रमाते हुए सुना: “हवा (रीह) अल्लाह की तरफ़ से राहत (रूह) का एक हिस्सा है। यह रहमत भी लाती है और अज़ाब भी लाती है। जब तुम इसे देखो तो इसे बुरा न कहो, बल्कि अल्लाह से इसकी भलाई माँगो और इसके शर से अल्लाह की पनाह तलब करो।” इब्न माजा ने भी अपनी सुन्नन में यही रिवायत नक़ल की है अबू बक्र बिन अबी शैबह से, वह यह्या बिन सईद से, वह औज़ाई से, वह जुहरी से, वह साबित अज़-जुरक़ाई से, और वह अबू हुरैरा से रिवायत करते हैं। यह भी मर्वी है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “हवा को बुरा न कहो, यह रहमान की साँसों में से है।” इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने इसमें राहत, ताज़गी और सुकून रखा है। सहीह मुस्लिम में इब्न अब्बास से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे मशरिकी हवा के ज़रिये मदद दी गई और क़ौम आद मगरिबी हवा</p>

<p>wind and 'Ād were destroyed by the west wind." This idea also comes in a report that Allah gave His Prophet ﷺ release with the wind on the day of the Confederates as He says: <i>"We sent a wind against them and other forces you could not see."</i> (33:9) The root of wind (<i>rīḥ</i>) comes from <i>rūḥ</i>, which is why the plural is <i>arwāḥ</i>.</p>	<p>के ज़रिये हलाक की गई।" यही मफ़हूम उस रिवायत में भी आता है कि अल्लाह ने ग़ज़वा-ए-अहज़ाब के दिन अपने नबी ﷺ की मदद हवा के ज़रिये फ़रमाई, जैसा कि वह फ़रमाता है: "हम ने उन पर एक हवा भेजी और ऐसे लश्कर भी जिन्हें तुम नहीं देखते थे" (33:9)। लफ़ज़ "रीह" (हवा) की अस्ल "रूह" से है, इसी लिए इसकी जमअ "अरवाह" आती है।</p>
<p>Hamzah and al-Kisā'ī recited <i>rīḥ</i> in the singular which is also the case in a number of other sūrah's. The rest recite it as <i>riyāḥ</i> in the plural. If it is in the singular, then it is a generic noun which indicates both a little and a lot. If it is in the plural, then it refers to the different directions in which the winds blow. The plural is with mercy and the singular is with punishment. That is frequent in the Qur'ān. It is related that the Messenger of Allah ﷺ used to say when the wind blew: "O Allah, make it winds and do not make it a</p>	<p>हमज़ा और किसाई ने रीह को वाहिद पढ़ा है, जैसा कि कुछ दूसरी सूरहों में भी है, जबकि बाकी कुराई इसे रियाह की सूरत में जमअ पढ़ते हैं। अगर यह वाहिद हो तो यह इस्म-ए-जिन्स है जो थोड़े और ज़्यादा दोनों पर दलालत करता है। और अगर जमअ हो तो इससे मुराद हवाओं की मुख्तलिफ़ सिम्तें हैं जिनमें वह चलती हैं। जमअ का इस्तेमाल आम तौर पर रहमत के साथ होता है और वाहिद का अज़ाब के साथ, और यह कुरआन में कसरत से पाया जाता है। रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब हवा चलती देखते तो फ़रमाते: "ऐ अल्लाह! इसे हवाएँ बना दे और इसे एक हवा न बना।" इस की वजह यह</p>

<p>wind.” That is because the wind of punishment is fierce and cohesive like a single body. The wind of mercy is soft and disconnected which is why the plural is used.</p>	<p>है कि अज़ाब की हवा सख्त और यकजा होती है, गोया एक जिस्म की तरह, जबकि रहमत की हवाएँ नरम और मुन्तशिर होती हैं, इसी लिए उनके लिए जमअ का सीगा इस्तेमाल किया जाता है।</p>
<p>Scholars say that the wind moves the air and can be strong or weak. When the movement of the air starts from the direction of the <i>qiblah</i>, then the wind is called an east wind (<i>ṣabā</i>). When the movement begins going towards the <i>qiblah</i>, it is a west wind (<i>dabūr</i>). When it begins from the right of the <i>qiblah</i> going to its left, it is a south wind. When it begins to the left of the <i>qiblah</i> going to the right, it is a north wind. Each of these winds has its own nature. Its use is according to its nature. The east wind is hot and dry. The west wind is cold and wet. The south is hot and wet. The north is cold and dry. The difference in their natures is like the difference in seasons.</p>	<p>उलमा कहते हैं कि हवा दरअसल फ़िज़ा को हरकत देती है और वह कभी तेज़ होती है और कभी हल्की। जब हवा की हरकत क़िब्ला की सिमत से शुरू हो तो उसे मशरिकी हवा (सब) कहा जाता है। जब उसकी हरकत क़िब्ला की तरफ़ हो तो वह मगरिबी हवा (दबूर) होती है। जब वह क़िब्ला के दाएँ जानिब से बाएँ तरफ़ चले तो वह जुनूबी हवा होती है, और जब बाएँ जानिब से दाएँ तरफ़ चले तो वह शुमाली हवा होती है। इनमें से हर हवा की अपनी एक ख़ास फ़ितरत होती है और उसका असर उसी फ़ितरत के मुताबिक़ होता है। मशरिकी हवा गरम और खुश्क होती है, मगरिबी हवा सर्द और मरतूब, जुनूबी हवा गरम और मरतूब, जबकि शुमाली हवा सर्द और खुश्क होती है। उनकी फ़ितरतों का फ़र्क़ मौसमों के फ़र्क़ की तरह है।</p>

<p>That is why Allah has made four seasons deriving from the change in the winds. The first season – spring – is hot and wet and growth starts in it, water descends and earth produces its flowers and its plants appear. People begin to cultivate the trees and many crops. Animals reproduce and have abundant milk. When spring ends, it is followed by summer which is like spring in respect of heat but differs from it as it is not wet. The weather in summer is hot and dry. In it fruits ripen and the grain planted in the spring becomes dry. When summer ends, it is followed by autumn which is like summer in being dry, but is not hot like it. Autumn weather is cold and dry. The soundness of fruits ends and they dry up and there is storing. Fruits are plucked, grapes harvested and all the trees emptied. When autumn ends, it is followed by winter which is like autumn in being cold, but is wet rather than dry, because</p>	<p>इसी लिए अल्लाह ने हवाओं की तब्दीली के नतीजे में चार मौसम बनाए हैं। पहला मौसम—बहार— गरम और मरतूब होता है, इसमें नशोनूमा शुरू होती है, पानी बरसता है और ज़मीन अपने फूल और पौधे उगाती है। लोग दरख्तों की काश्त और मुख्तलिफ़ फ़सलें उगाना शुरू करते हैं, और जानवर अफ़ज़ाइश करते हैं और दूध की कसरत होती है। जब बहार ख़त्म होती है तो उसके बाद गरमी (गरमा) आती है, जो हरारत में तो बहार जैसी होती है मगर इसमें नमी नहीं होती। गरमी का मौसम गरम और ख़ुश्क होता है, इसमें फल पक जाते हैं और बहार में बोया गया अनाज ख़ुश्क हो जाता है। जब गरमी ख़त्म होती है तो उसके बाद ख़िज़ाँ आती है, जो ख़ुश्की में तो गरमी जैसी है लेकिन उसकी तरह गरम नहीं होती। ख़िज़ाँ का मौसम सर्द और ख़ुश्क होता है। इसमें फलों की ताज़गी ख़त्म हो जाती है, वह ख़ुश्क हो जाते हैं और ज़खीरा किए जाते हैं। फल तोड़े जाते हैं, अंगूर की फ़सल काटी जाती है और दरख़्त ख़ाली हो जाते हैं। जब ख़िज़ाँ ख़त्म होती है तो उसके बाद सरमा (सर्दी) आती है, जो सर्दी में ख़िज़ाँ जैसी है</p>
---	---

<p>the weather of the winter is cold and wet. There is a lot of rain and snow and the ground is inert like a body at rest. It does not move until Allah makes the heat of spring return to it. When the warmth joins with the moisture, then there is growth by Allah's permission. There are many more winds in addition to what we mentioned, but the bases are these four. Every wind between two falls under the ruling of the one that it is closest to.</p>	<p>मगर खुश्क के बजाय मरतूब होती है, क्योंकि सरमा का मौसम सर्द और मरतूब होता है। इसमें बारिश और बर्फ़ ज़्यादा होती है और ज़मीन एक साकिन जिस्म की तरह बे-हरकत हो जाती है, यहाँ तक कि अल्लाह दोबारा बहार की गरमी इसमें लौटा देता है। जब हरारत नमी के साथ मिलती है तो अल्लाह के हुक्म से दोबारा नशोनुमा शुरू हो जाती है। हवाओं की इसके अलावा भी कई किस्में हैं, लेकिन अस्ल बुनियाद यही चार हैं। जो हवा इनके दरमियान हो वह उसी के तहत होती है जिसके ज़्यादा करीब हो।</p>
<p>and the clouds subservient between heaven and earth,</p>	<p>और वह बादल जो आसमान और ज़मीन के दरमियान ताबे-फ़रमान हैं,</p>
<p>'Sahāb' (clouds) take that name because they are dragged (<i>insihāb</i>) along in the air. <i>Sahaba</i> means to drag along. <i>Sahb</i>, from the same root, means vigorous eating and drinking. They are 'subservient' because they are moved without resistance from one place to another. It is said that their subservience lies in</p>	<p>'सहाब' (बादल) को यह नाम इस लिए दिया गया है क्योंकि वह फ़िज़ा में खींचे जाते हैं (इंसिहाब से)। सहब का मतलब है खींच कर ले जाना। इसी माद्दे से सहब का एक और मतलब ज़्यादा खाना-पीना भी है। उन्हें "ताबे-फ़रमान" इस लिए कहा गया है कि वह एक जगह से दूसरी जगह बिना किसी मज़ाहमत के मुन्तक़िल किए जाते हैं। यह भी कहा</p>

their remaining poised between heaven and earth without any support. The first is more likely. They can bring either water or punishment. In *Muslim*, Abū Hurayrah reported that the Prophet ﷺ said: “Once, while a man was walking in the desert, he heard a voice in a cloud saying, ‘Water the garden of so-and-so,’ and that cloud went and poured out its water into a rocky area. There was a certain water channel which held all the water and he followed it and found a man standing in his garden directing the water with his spade. He asked him, ‘Slave of Allah, what is your name?’ He said, ‘So-and-so,’ giving the same name he had heard from the cloud. The man then said to him, ‘O slave of Allah, why did you ask me my name?’ The first man said, ‘I heard a voice in the cloud which this water came from say, “Water the garden of so-and-so,” giving your name. What are you doing with it?’

गया है कि उनकी ताबेदारी इस में है कि वह बिना किसी सहारे के आसमान और ज़मीन के दरमियान मुअल्लक रहते हैं, लेकिन पहला मफ़हूम ज़्यादा क़वी है। यह कभी पानी (रहमत) लाते हैं और कभी अज़ाब। सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “एक शख्स सहारा में जा रहा था कि उसने एक बादल में आवाज़ सुनी जो कह रही थी: ‘फलों के बाग़ को सीराब करो।’ फिर वह बादल एक पत्थरीली ज़मीन पर जा कर अपना पानी बहा देता है। वहाँ एक नाली थी जिसमें वह सारा पानी जमा हो गया। वह शख्स उसके पीछे गया तो देखा कि एक आदमी अपने बाग़ में खड़ा बेलचे से पानी का रुख मोड़ रहा है। उसने पूछा: ‘ऐ अल्लाह के बंदे! तुम्हारा नाम क्या है?’ उसने वही नाम बताया जो उसने बादल से सुना था। फिर उसने पूछा: ‘तुमने मेरा नाम क्यों पूछा?’ उस शख्स ने कहा: ‘मैंने इसी बादल में एक आवाज़ सुनी थी जिससे यह पानी आया कि कह रही थी: “फलों के बाग़ को सीराब करो” और उसमें तुम्हारा नाम लिया गया था, तो तुम इसके साथ क्या करते हो?’ उसने कहा: ‘जब तुमने पूछा है तो बताता हूँ:

<p>He said, ‘Since you have asked this, I will [reply]. I wait and see what it produces and give a third of it away as <i>sadaqah</i>, and my family and I eat from a third, and I reinvest a third back into it.’” In one version: “I devote a third of it to the poor, beggars and travellers.”</p>	<p>मैं देखता हूँ कि यह क्या पैदा करता है, फिर इसका एक तिहाई सदका कर देता हूँ, एक तिहाई में मैं और मेरे अहल-ओ-ऐयाल खाते हैं, और एक तिहाई दोबारा उसी में लगा देता हूँ।” एक रिवायत में है: “मैं इसका एक तिहाई हिस्सा फुकरा, मसाकीन और मुसाफ़िरोँ के लिए रखता हूँ।”</p>
<p>In the Qur’ān we also find: “<i>It is Allah who sends the winds which raise the clouds which We then drive to a dead land</i>” (35:9) and “...when they have lifted up the heavy clouds, We dispatch them to a dead land and send down water to it” (7:57), and there are many other similar āyahs. Ibn Mājah transmitted that ‘Ā’ishah said: “When the Prophet ﷺ saw a cloud coming on the horizon, he left what he was doing, even the prayer, to greet it. He would say, ‘O Allah, we seek refuge with You from the evil of what You have sent.’ If it rained, he would say, ‘O Allah, a useful watering,’ two or three times. If Allah moved it on and</p>	<p>कुरआन में यह भी आता है: “अल्लाह वह है जो हवाओं को भेजता है, फिर वह बादल उठाती हैं, फिर हम उन्हें मुर्दा ज़मीन की तरफ़ ले जाते हैं” (35:9), और “...जब वह भारी बादलों को उठा लेती हैं तो हम उन्हें किसी मुर्दा ज़मीन की तरफ़ भेजते हैं और उस पर पानी नाज़िल करते हैं” (7:57), और इसी तरह की बहुत सी दूसरी आयतें भी हैं। इब्न माजा ने रिवायत किया है कि आइशा ने कहा: “जब नबी ﷺ अफ़क़ पर बादल को आते देखते तो जो कुछ कर रहे होते उसे छोड़ देते, यहाँ तक कि नमाज़ भी, और उसका इस्तक़बाल करते। आप फ़रमाते: ‘ऐ अल्लाह! हम उसके शर से तेरी पनाह चाहते हैं जिसे तूने भेजा है।’ अगर बारिश होती तो आप फ़रमाते: ‘ऐ अल्लाह! नफ़ा देने वाली बारिश बना दे’, दो या तीन मरतबा।</p>

<p>it did not rain, he would praise Allah for that.” ‘Ā’ishah also said: “When it was a day of wind and clouds, that could be seen in the face of the Messenger of Allah ﷺ. He paced back and forth. If it rained, he was happy and that state left him.” She said: “I asked him and he said, ‘I fear that it will be a punishment sent on my community.’ When he saw rain, he said, ‘Mercy.’” One variant has: “‘Ā’ishah, perhaps it will be as the people of ‘Ād said: ‘When they saw it as a storm cloud advancing on their valleys, they said, “This is a storm cloud which will give us rain.”’ (46:24)”</p>	<p>और अगर अल्लाह उसे हटा देता और बारिश न होती तो आप उस पर अल्लाह की हम्द करते।” आइशा ने यह भी कहा: “जब हवा और बादल वाला दिन होता तो यह कैफ़ियत रसूलुल्लाह ﷺ के चेहरे पर ज़ाहिर होती थी। आप आगे पीछे चलते रहते। जब बारिश होती तो आप खुश हो जाते और वह कैफ़ियत ख़त्म हो जाती।” उन्होंने कहा: “मैंने आप से पूछा तो आप ने फ़रमाया: ‘मुझे अंदेशा होता है कि कहीं यह मेरी उम्मत पर भेजा जाने वाला अज़ाब न हो।’ और जब आप बारिश देखते तो फ़रमाते: ‘रहमत है।’” एक रिवायत में है: “ऐ आइशा! शायद यह वैसा ही हो जैसा क़ौम-ए-आद ने कहा था: ‘जब उन्होंने उसे अपनी वादियों की तरफ़ आते हुए बादल की सूरत में देखा तो कहा: यह तो बादल है जो हमें बारिश देगा’ (46:24)”</p>
<p>These ḥadīths and āyahs indicate the soundness of the first view that their subservience is not fixed. Allah knows best. Firmness would indicate that there is no change. If the firmness meant is in the air, it is neither in heaven nor</p>	<p>ये अहादीस और आयतें इस बात की दलील हैं कि पहला क़ौल दुरुस्त है कि बादलों की ताबेदारी किसी एक हालत पर क़ायम नहीं। अल्लाह बेहतर जानता है। अगर सबात मुराद लिया जाए तो इसका मतलब यह होगा कि उनमें कोई तब्दीली नहीं,</p>

<p>earth, and so it is sound since He says “between”. They are subservient and carry. That shows a greater power, as is the case with birds in the air as the Almighty says: <i>“Do they not see the birds suspended in mid-air up in the sky? Nothing holds them there except Allah”</i> (16:79) and <i>“Have they not looked at the birds above them, with wings outspread and folded back? Nothing holds them up but the All-Merciful.”</i> (67:19)</p>	<p>जबकि अगर इस सबात को फ़िज़ा में समझा जाए तो वह न आसमान में है और न ज़मीन में, लिहाज़ा “दरमियान” के लफ़्ज़ के मुताबिक़ यही दुरुस्त है। ये बादल ताबे हैं और (अपने अंदर पानी) उठाए हुए हैं, और यह एक अज़ीम कुदरत की निशानी है, जैसे हवा में परिंदों का हाल है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: “क्या उन्होंने परिंदों को नहीं देखा जो आसमान की फ़िज़ा में मुअल्लक हैं? उन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं थामे हुए” (16:79), और “क्या उन्होंने अपने ऊपर परिंदों को नहीं देखा, जो कभी पर फैलाए और कभी समेटे होते हैं? उन्हें रहमान के सिवा कोई नहीं थामे हुए” (67:19)।</p>
<p>Ka’b al-Aḥbār said, “The clouds are sieves for the rain. Were it not for the clouds, when water descended from heaven, it would ruin the earth on which it fell.” Ibn ‘Abbās related that from him. Khaṭīb Abū Bakr Aḥmad ibn ‘Alī mentioned that Mu‘ādh ibn ‘Abdullāh ibn Khubayb al-Juhanī said, “Once, when I was among the Banū Salamah, I</p>	<p>कअब अल-अहबार ने कहा: “बादल बारिश के लिए छलनी की मानिंद हैं। अगर बादल न होते तो जब पानी आसमान से नाज़िल होता तो जिस ज़मीन पर गिरता उसे तबाह कर देता।” यह बात इब्न अब्बास ने उनसे रिवायत की है। खतीब अबू बक्र अहमद बिन अली ने ज़िक्र किया कि मुआज़ बिन अब्दुल्लाह बिन खुबैब अल-जुहनी ने कहा: “एक मरतबा मैं बनू सलमा के दरमियान था कि मैंने</p>

<p>saw Ibn ‘Abbās pass by on a mule. Tubay‘, the son of Ka‘b’s wife, passed by him and greeted Ibn ‘Abbās. Ibn ‘Abbās asked him, ‘Did you hear Ka‘b al-Aḥbār say anything about clouds?’” “Yes,” he replied, “he said, ‘The clouds are sieves for the rain. Were it not for the clouds, when water descended from heaven, it would ruin the earth on which it fell.’” He asked, “Did you hear Ka‘b say anything about earth that grows plants one year and then again in the following year?” “Yes,” he said. “I heard him say, ‘Seeds descend from heaven.’” Ibn ‘Abbās said, “And I heard that from Ka‘b.”</p>	<p>इब्र अब्बास को देखा कि वह खच्चर पर सवार गुज़र रहे थे। तुबै‘, जो कअब की बीवी का बेटा था, उनके पास से गुज़रा और इब्र अब्बास को सलाम किया। इब्र अब्बास ने उससे पूछा: ‘क्या तुमने कअब अल-अहबार से बादलों के बारे में कुछ सुना है?’” उसने कहा: “हाँ, उन्होंने कहा था: ‘बादल बारिश के लिए छलनी की तरह हैं। अगर बादल न होते तो जब पानी आसमान से नाज़िल होता तो जिस ज़मीन पर गिरता उसे तबाह कर देता।” फिर इब्र अब्बास ने पूछा: “क्या तुमने कअब से उस ज़मीन के बारे में भी कुछ सुना है जो एक साल पौधे उगाती है और फिर अगले साल दोबारा उगाती है?” उसने कहा: “हाँ, मैंने उन्हें यह कहते सुना कि ‘बीज आसमान से नाज़िल होते हैं।” इब्र अब्बास ने कहा: “मैंने भी यह बात कअब से सुनी है।”</p>
<p>There are Signs for people who use their intellect.</p>	<p>अक़्ल रखने वालों के लिए निशानियाँ हैं।</p>
<p>Allah’s Signs are evidence of His Oneness and Power. That is why these matters are mentioned after the previous āyah, which begins, “Your God</p>	<p>अल्लाह की निशानियाँ उसकी वहदानियत और कुदरत की दलील हैं। इसी लिए ये उमूर पिछली आयत के बाद ज़िक्र किए गए हैं, जो इस जुमले से शुरू होती है: “तुम्हारा</p>

<p><i>is One God...</i>”, in order to demonstrate the truth of that statement about His Oneness and to mention His mercy and kindness to His creatures. The Prophet ﷺ said, “Woe to the person who reads this āyah and then dismisses it and does not reflect on it or ponder it.”</p>	<p>माबूद एक ही माबूद है...”, ताकि उसकी वहदानियत के इस बयान की सच्चाई वाज़ेह की जाए और उसकी मख़लूक़ पर उसकी रहमत और मेहरबानी का ज़िक्र हो। नबी ﷺ ने फ़रमाया: “हलाकत है उस शख़्स के लिए जो इस आयत को पढ़े फिर उसे नज़रअंदाज़ कर दे और उसमें ग़ौर व फ़िक्र न करे।”</p>
<p>If someone were to ask, “What will disprove that the earth engendered itself?”, he is told that this is impossible because if it had engendered itself, it must have been existent or non-existent when it did it. If it was non-existent, then it is impossible for it to have done it because that must come from one who is alive, knowing, powerful, and possessing volition. It is not valid to describe something that does not exist with those attributes. If it is existent, then its existence would not require engendering. If this were possible, then it would be possible for a building to build itself, wood to carve itself or</p>	<p>अगर कोई यह सवाल करे कि “क्या चीज़ इस बात को बातिल करती है कि ज़मीन ने खुद को पैदा किया हो?” तो उसे कहा जाएगा कि यह नामुमकिन है, क्योंकि अगर उसने खुद को पैदा किया होता तो उस वक़्त वह या तो मौजूद होती या ग़ैर-मौजूद। अगर वह ग़ैर-मौजूद होती तो उसके लिए यह मुमकिन नहीं था कि वह खुद को पैदा करे, क्योंकि यह काम उसी से सादिर होता है जो ज़िंदा, जानने वाला, क़ादिर और इरादा रखने वाला हो, और जो मौजूद ही न हो उसके लिए ये सिफ़ात साबित नहीं की जा सकतीं। और अगर वह पहले से मौजूद होती तो उसके वजूद को पैदा करने की ज़रूरत ही न होती। अगर यह मुमकिन मान लिया जाए तो फिर यह भी मुमकिन होगा कि कोई</p>

<p>wool to weave itself. That is impossible. That which leads to an impossibility is impossible.</p>	<p>इमारत खुद को बनाए, लकड़ी खुद को तराशे या ऊन खुद-ब-खुद बुनी जाए, और यह सब मुहाल है। जो चीज़ मुहाल तक ले जाए वह खुद भी मुहाल होती है।</p>
<p>Allah does not confine mention of His Oneness to mere reports, but also combines that with investigation and reflection on the āyahs of the Qur’ān. He instructed His Prophet ﷺ: <i>“Say: ‘Look at what there is in the heavens and on the earth.’”</i> (10:101) This is addressed to the unbelievers since the Almighty says: <i>“But Signs and warnings are of no avail to people who do not believe.”</i> He also says: <i>“Have they not looked into the dominions of the heavens and the earth”</i> (7:185) and ‘dominions’ means ‘Signs’. He says: <i>“...and in yourselves as well. Do you not then see?”</i> (51:21) He is saying, “Do they not look at themselves with proper reflection and due consideration so that through that they can deduce that it is</p>	<p>अल्लाह अपनी वहदानियत का ज़िक्र सिर्फ़ ख़बरी अंदाज़ में महदूद नहीं करता बल्कि उसे कुरआन की आयतों में गौर-ओ-फ़िक्र और तहक़ीक़ के साथ भी जोड़ता है। उसने अपने नबी ﷺ को हुक्म दिया: “कह दो: आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है उसे देखो” (10:101)। यह ख़िताब काफ़िरों से है, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है: “लेकिन निशानियाँ और डर सुनाने वाली बातें उन लोगों को कोई फ़ायदा नहीं देती जो ईमान नहीं लाते”। वह यह भी फ़रमाता है: “क्या उन्होंने आसमानों और ज़मीन की बादशाही में गौर नहीं किया” (7:185), और यहाँ “बादशाही” से मुराद “निशानियाँ” हैं। और वह फ़रमाता है: “...और खुद तुम्हारे अंदर भी, क्या तुम देखते नहीं?” (51:21)। यानी वह यह कह रहा है: “क्या वह अपने नफ़सों में सही गौर-ओ-फ़िक्र नहीं करते ताकि इससे यह नतीजा निकाल सकें कि</p>

<p>impossible for events and changes to be self-engendered and that something engendered requires a Maker to make it, and that that Maker must be wise, knowing, powerful, possessing will, hearing, seeing, speaking. That is because if He did not possess these attributes, a human being would be more perfect than Him and that is impossible.”</p>	<p>हादिसात और तब्दीलियाँ खुद-ब-खुद पैदा नहीं हो सकतीं, और हर पैदा होने वाली चीज़ के लिए एक पैदा करने वाला ज़रूरी है, और वह पैदा करने वाला हिकमत वाला, इल्म वाला, कुदरत वाला, इरादा रखने वाला, सुनने वाला, देखने वाला और बोलने वाला होना चाहिए। क्योंकि अगर वह इन सिफ़ात का हामिल न हो तो इंसान उससे ज़्यादा कामिल हो जाएगा, और यह मुहाल है।”</p>
<p>Allah says: “<i>We created man from the purest kind of clay</i>” (23:12), meaning Ādam, “<i>then made him (meaning his descendants) a drop in a secure receptacle... you will be raised again.</i>” (23:13) When a person reflects on the intellect he has been given, he will see that he is managed and moved through various states. He was a drop, then a clot, then a lump, and then flesh and bones. He knows that he did not move himself from being incomplete to being complete because he is not capable of moving himself to the best state, which is full</p>	<p>अल्लाह फ़रमाता है: “हम ने इंसान को मिट्टी के ख़ालिस जोहर से पैदा किया” (23:12), यानी आदम को, “फिर हम ने उसे (यानी उसकी नस्ल को) एक महफूज़ ठिकाने में नुत्फ़ा बनाया... फिर तुम्हें दोबारा उठाया जाएगा” (23:13)। जब इंसान उस अक़ल पर ग़ौर करता है जो उसे दी गई है तो वह देखता है कि उसे मुख़्तलिफ़ हालतों में मुन्तक़िल किया जाता है और उसकी तदबीर की जाती है। वह पहले नुत्फ़ा था, फिर जमे हुए ख़ून का लोथड़ा, फिर गोश्त का टुकड़ा, और फिर गोश्त और हड्डियाँ बना। वह जानता है कि उसने खुद को नाक़िस हालत से कामिल हालत तक नहीं पहुँचाया, क्योंकि वह</p>

<p>use of his intellect and full strength of limbs. He is not able to add another limb to his limbs. That indicates that he is in a state of incompleteness and weakness and lacks the power to do that. He sees himself as a young man, then a mature man, and then an old man. He did not move himself from being a strong young man to being old and senile. He did not choose it for himself and it is not within his capacity to remove his being old and replace it with restoration of the strength of youth. By that he knows that he is not the one who did those actions on his own and that he has a Maker who accomplished this and moved him from state to state. That had to be the case, for his states could not have changed without there being someone to transfer or manage them.</p>	<p>खुद को बेहतरीन हालत तक ले जाने की कुदरत नहीं रखता, जो कि अक्ल के कामिल इस्तेमाल और अज़ा की मुकम्मल ताक़त की हालत है। वह अपने अज़ा में एक अजू भी इज़ाफ़ा नहीं कर सकता। यह इस बात की दलील है कि वह कमज़ोरी और नक्स की हालत में है और उसमें यह कुदरत नहीं। वह खुद को पहले जवान देखता है, फिर पुख़्ता उम्र का, और फिर बूढ़ा। उसने खुद को जवानी से बुढ़ापे और ज़अफ़ की तरफ़ मुन्तक़िल नहीं किया, न उसने इसे अपने लिए इख़्तियार किया, और न ही वह इस बात पर क़ादिर है कि बुढ़ापे को दूर कर के दोबारा जवानी की ताक़त हासिल कर ले। इससे वह जान लेता है कि यह सब कुछ उसने खुद नहीं किया बल्कि उसका एक ख़ालिक़ है जिसने उसे एक हालत से दूसरी हालत में मुन्तक़िल किया। यह ज़रूरी है, क्योंकि उसकी हालतें उस वक़्त तक तब्दील नहीं हो सकतीं जब तक कोई मुन्तक़िल करने वाला और तदबीर करने वाला मौजूद न हो।</p>
<p>A wise man said, “Everything in the macrocosm has its like in the microcosm, which is the body of the human being. That</p>	<p>एक दाना ने कहा: “बड़ी कायनात (आलम-ए-कबीर) में जो कुछ है उसकी मिसाल छोटी कायनात</p>

<p>is why the Almighty said: <i>'We created man in the finest mould'</i> (95:4) and: <i>'...and in yourselves as well. Do you not then see?'</i> (51:21)." The sensory faculties of the human being are more noble than the luminous stars. Hearing and sight are in the position of the sun and the moon with regards to perceiving things. His limbs become dust when they decay, which is the genus of the earth. He contains water in the form of veins and other fluid components of the body. He contains air in the form of the spirit and respiration. He contains fire in the form of yellow bile. His veins are like the rivers of the earth. His liver is in the position of the springs which supply the rivers as the liver supplies the hepatic veins. His bladder is in the position of the sea since the contents of the body are poured into it as the rivers pour into the sea. His bones are like trees. As every tree has leaves and fruit, so every limb has an action or</p>	<p>(आलम-ए-सगीर) में भी है, और वह इंसान का जिस्म है। इसी लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया: 'हम ने इंसान को बेहतरीन साख़्त पर पैदा किया' (95:4) और: '...और खुद तुम्हारे अंदर भी, क्या तुम देखते नहीं?' (51:21)।" इंसान की हसी कुव्वतें रोशन सितारों से भी ज़्यादा बुलंद हैं। सुनने और देखने की कुव्वतें इद्राक के लिहाज़ से सूरज और चाँद की मानिंद हैं। उसके अज़ा जब गलते सड़ते हैं तो मिट्टी बन जाते हैं, जो ज़मीन की जिन्स है। उसके अंदर पानी रगों और दूसरे सियाल अजज़ा की सूरत में मौजूद है। उसमें हवा रूह और सांस की शक़ल में है, और आग ज़र्द पित्त (पीला सफ़रा) की सूरत में मौजूद है। उसकी रगों ज़मीन की नहरों की मानिंद हैं। उसका जिगर उन चश्मों की तरह है जो नहरों को पानी फ़राहम करते हैं, जैसे जिगर रगों को खून फ़राहम करता है। उसका मसाना समंदर की मानिंद है क्योंकि जिस्म के फ़ज़लात उसमें जमा होते हैं जैसे दरिया समंदर में गिरते हैं। उसकी हड्डियाँ दरख़्तों की मानिंद हैं, और जिस तरह हर दरख़्त के पत्ते और फल होते हैं, उसी तरह हर अज़ू का कोई न कोई अमल</p>
--	---

<p>effect. The hair on the body is like the plants and insects on the earth. Then the human being can make the sound of every animal with his tongue and his limbs are adapted to the action of every animal. So he is the microcosm within the macrocosm, created and brought about by One Maker. There is no god but Him.</p>	<p>और असर होता है। जिस्म के बाल ज़मीन के पौधों और कीड़ों की मानिंद हैं। फिर इंसान अपनी ज़बान से हर जानवर की आवाज़ निकाल सकता है और उसके अज़ा हर जानवर के अफ़आल के मुताबिक़ ढल सकते हैं। इस तरह वह बड़ी कायनात के अंदर एक छोटी कायनात है, जिसे एक ही ख़ालिक़ ने पैदा किया और वजूद में लाया। उसके सिवा कोई माबूद नहीं।</p>
<p>Some people set up equals to Allah, loving them as they should love Allah. But those who believe have greater love for Allah. If only you could see those who do wrong at the time when they see the punishment, and that truly all strength belongs to Allah, and that Allah is severe in punishment. [2:165]</p>	<p>कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसका हमसर बनाते हैं और उनसे ऐसी मुहब्बत करते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से करनी चाहिए, जबकि ईमान वाले अल्लाह से सबसे ज़्यादा मुहब्बत रखते हैं। काश तुम देख सकते जब ज़ालिम लोग अज़ाब को देखेंगे, तो उन्हें यक़ीन हो जाएगा कि सारी ताक़त अल्लाह ही के लिए है और बेशक अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। [2:165]</p>
<p>Some people set up equals to Allah,</p>	<p>कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसका हमसर बनाते हैं,</p>
<p>In the previous āyah, Allah gave evidence of His Oneness,</p>	<p>पिछली आयत में अल्लाह ने अपनी वहदानियत, कुदरत और अपनी</p>

<p>Power and the immensity of His authority and He now adds these cogent āyahs, for those with intelligence, about people who set up equals to Him. Mujāhid says that what is meant are the idols which they worshipped in the same way that they worshipped Allah, giving them equal value.</p>	<p>अज़ीम बादशाही की दलीलें पेश कीं, और अब वह अक़ल रखने वालों के लिए इन मज़बूत दलीलों के साथ उन लोगों का ज़िक्र करता है जो उसके साथ शरीक ठहराते हैं। मुजाहिद कहते हैं कि इससे मुराद वह बुत हैं जिनकी वह उसी तरह इबादत करते थे जैसे अल्लाह की इबादत करते थे और उन्हें बराबर का दर्जा देते थे।</p>
<p>loving them as they should love Allah.</p>	<p>उनसे ऐसी मुहब्बत करते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से करनी चाहिए।</p>
<p>They love their false idols as much as the believers love the Truly Real. Al-Mubarrad said that. Az-Zajjāj said, “In spite of the lack of power of the idols, they love them as the believers love Allah with His real power.” Ibn ‘Abbās and as-Suddī said that it refers to their leaders whom they follow in disobeying Allah. Ibn Kaysān and az-Zajjāj said that it means that they have equal love for Allah and the idols.</p>	<p>वह अपने बातिल माबूदों से उतनी ही मुहब्बत करते हैं जितनी अहल-ए-ईमान सच्चे माबूद (अल्लाह) से करते हैं। यह बात अल-मुबर्रद ने कही है। अज़-ज़ज्जाज ने कहा: “बुतों की बेबसी के बावजूद वह उनसे उसी तरह मुहब्बत करते हैं जैसे मोमिन अल्लाह से उसकी हक़ीक़ी कुदरत के साथ मुहब्बत करते हैं।” इब्न अब्बास और अस-सुद्दी ने कहा कि इससे मुराद उनके वह पेशवा हैं जिनकी वह अल्लाह की नाफ़रमानी में पैरवी करते हैं। इब्न कैसान और अज़-ज़ज्जाज ने कहा कि इसका मतलब यह है कि वह अल्लाह और बुतों दोनों से बराबर मुहब्बत रखते</p>

	हैं।
But those who believe have greater love for Allah	लेकिन जो लोग ईमान लाए हैं वह अल्लाह से ज़्यादा मुहब्बत रखते हैं।
Greater than the love that idolaters have for their idols and followers have for those they follow. It is said that they have greater love because Allah loved them first and so they love Him. When someone has the one he loves attest to his love, then his love is more complete. Allah says: “...a people whom He loves and who love Him.” (5:54) The love that the believers have for Allah and His love of them will be explained in Sūrat Āl ‘Imrān, Allah willing.	यह मुहब्बत मुश्रिकीन की अपने बुतों से मुहब्बत और पैरोकारों की अपने पेशवाओं से मुहब्बत से ज़्यादा है। यह भी कहा गया है कि मोमिनों की मुहब्बत ज़्यादा इसलिए है कि अल्लाह ने पहले उनसे मुहब्बत की, इसलिए वह उससे मुहब्बत करते हैं। जब किसी शख्स को उसके महबूब की तरफ़ से उसकी मुहब्बत की गवाही मिल जाए तो उसकी मुहब्बत ज़्यादा कामिल हो जाती है। अल्लाह फ़रमाता है: “...वह ऐसे लोगों से मुहब्बत करता है और वह उससे मुहब्बत करते हैं” (5:54)। मोमिनों की अल्लाह से मुहब्बत और अल्लाह की उनसे मुहब्बत की मज़ीद वज़ाहत सूरत आल-ए-इमरान में आएगी, इंशा अल्लाह।
If only you could see those who do wrong at the time when they see the punishment,	काश तुम देख सकते उन लोगों को जो जुल्म करते हैं, उस वक़्त जब वह अज़ाब को देखेंगे,
The reading of the people of	अहल-ए-मदीना और अहल-ए-शाम

<p>Madīnah and Syria is “you could see” with <i>tā</i>’ whereas the people of Makkah and Kūfa read it as “they could see” with <i>yā</i>’. Abū ‘Ubayd said, “The meaning is, that if those who do wrong in this world were to see the punishment of the Next World, they would know when they see it that all strength belongs to Allah.” “See” then would mean actual vision. An-Nahhās says in his book <i>The Meanings of the Qur’ān</i>, “This position is the one generally held by the people of tafsīr.” In <i>I’rāb al-Qur’ān</i>, Muḥammad ibn Yazīd said that this explanation of Abū ‘Ubayd is unlikely and it is not well expressed because it implies “if those who did wrong had seen the punishment.” So it is as if he considers it uncertain when Allah has made it mandatory.</p>	<p>की क़िराअत में “तुम देखोगे” (ता के साथ) है, जबकि अहल-ए-मक्का और अहल-ए-कूफ़ा इसे “वह देखेंगे” (या के साथ) पढ़ते हैं। अबू उबैद ने कहा: “इसका मतलब यह है कि अगर दुनिया में जुल्म करने वाले लोग आख़िरत के अज़ाब को देख लें, तो जब वह उसे देखेंगे तो जान लेंगे कि सारी ताक़त अल्लाह ही के लिए है।” इस तरह “देखना” हक़ीक़ी देखने के मअनी में होगा। नहहास ने अपनी किताब <i>मअनी अल-क़ुरआन</i> में कहा: “यही मौक़िफ़ आम तौर पर अहल-ए-तफ़सीर का है।” और <i>इराब अल-क़ुरआन</i> में मुहम्मद बिन यज़ीद ने कहा कि अबू उबैद की यह तफ़सीर क़वी नहीं और न ही अच्छी तरह बयान की गई है, क्योंकि इससे यह मफ़हूम निकलता है कि “अगर ज़ालिमों ने अज़ाब को देखा होता”, गोया वह इसे ग़ैर-यक़ीनी क़रार दे रहे हैं, हालाँकि अल्लाह ने इसे यक़ीनी बना दिया है।</p>
<p>and that truly all strength belongs to Allah,</p>	<p>और यह कि हक़ीक़तन सारी ताक़त अल्लाह ही के लिए है,</p>
<p>Al-Akhfash said that the import of the verb “see” continues so that the meaning is, “If those</p>	<p>अल-अख़फ़श ने कहा कि फ़ैल “देखना” का मफ़हूम यहाँ जारी रहता है, यानी मअनी यह होगा: “अगर</p>

<p>who do wrong could see that strength belongs to Allah...” and that the word “see” means “know” in this context, so it really means: “if they knew the reality of the strength of Allah and the severity of His punishment.” Taking the Madinan reading, it is a threat: “If you, Muḥammad, could see those who do wrong when they see the punishment and are terrified of it, they would affirm that all strength belongs to Allah.” The Prophet ﷺ knew that, but he was addressed when his whole community was intended, as is often the case. It may also mean: “Say, Muḥammad, to the wrongdoer...”</p>	<p>ज़ालिम लोग देख लेते कि सारी ताक़त अल्लाह ही के लिए है...” और यहाँ “देखना” के मअनी “जानना” के हैं, यानी हक़ीक़तन मतलब यह है: “अगर वह अल्लाह की ताक़त की हक़ीक़त और उसके अज़ाब की शिद्दत को जान लेते।” मदनी क़िराअत के मुताबिक़ यह एक वर्ईद है: “ऐ मुहम्मद ﷺ! अगर आप इन ज़ालिमों को उस वक़्त देखें जब वह अज़ाब को देखेंगे और उससे ख़ौफ़ज़दा होंगे, तो वह इक़रार करेंगे कि सारी ताक़त अल्लाह ही के लिए है।” नबी ﷺ को तो यह इल्म था, लेकिन ख़िताब आप से किया गया जबकि मुराद पूरी उम्मत होती है, जैसा कि अक्सर होता है। यह मअनी भी हो सकता है: “कह दो, ऐ मुहम्मद ﷺ, उस ज़ालिम से...”</p>
<p>When those who were followed disown those who followed them, and they see the punishment, and the connection between them is cut, [2:166]</p>	<p>जब वह लोग जिनकी पैरवी की जाती थी, अपने पैरोकारों से बेज़ारी का इज़हार करेंगे, और वह अज़ाब को देख लेंगे, और उनके दरमियान के तमाम ताल्लुक़ात मुनक़तअ हो जाएँगे, [2:166]</p>
<p>When those who were followed disown those who</p>	<p>जब वह लोग जिनकी पैरवी की जाती थी अपने पैरोकारों से बेज़ारी</p>

followed them,	का इज़हार करेंगे,
<p>“Those who were followed” are the masters and leaders of the unbelievers. They will declare themselves free of those who followed them in disbelief, as Qatādah, ‘Atā’ and ar-Rabī‘ said. Qatādah also said, as did as-Suddī, that they were the shayṭāns who misguide mankind and who will declare themselves free of them on the Last Day. It is said that it is general to all who are followed in disbelief.</p>	<p>“जिनकी पैरवी की जाती थी” से मुराद काफ़िरों के सरदार और पेशवा हैं। वह अपने उन पैरोकारों से बेज़ारी का इज़हार करेंगे जिन्होंने कुफ़्र में उनकी पैरवी की, जैसा कि क़तादा, अता और रबीअ ने कहा है। क़तादा ने यह भी कहा, और अस-सुद्दी ने भी, कि इससे मुराद वह शयातीन हैं जो लोगों को गुमराह करते हैं और क्रियामत के दिन उनसे बेज़ारी का एलान करेंगे। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद आम तौर पर हर वह शख्स है जिसकी कुफ़्र में पैरवी की गई हो।</p>
and they see the punishment,	और वह अज़ाब को देख लेंगे,
<p>“They” are both the followers and the followed. It is said to be through the certainty they will have in this world at the time of their death about the inevitability of punishment, and it is said to refer to their being presented before Allah and questioned in the Next World. Both may be true: it can mean at the time of death and it can mean in the Next World when they actually experience</p>	<p>“वह” से मुराद दोनों हैं: पैरोकार भी और जिनकी पैरवी की जाती थी वह भी। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद दुनिया में मौत के वक़्त उनका वह यक़ीन है जो उन्हें अज़ाब के हत्मी होने के बारे में हासिल हो जाता है, और यह भी कहा गया है कि इससे मुराद आख़िरत में अल्लाह के सामने पेश होना और वहाँ उनसे सवाल किया जाना है। दोनों बातें दुरुस्त हो सकती हैं: यह मौत के वक़्त भी मुराद हो सकता है और आख़िरत में भी जब</p>

<p>the pain of the punishment.</p>	<p>वह हक़ीक़तन अज़ाब की तकलीफ़ को महसूस करेंगे।</p>
<p>and the connection between them is cut,</p>	<p>और उनके दरमियान के तमाम ताल्लुकात मुनक़तअ हो जाएँगे,</p>
<p>This refers to their connection in this world through kinship and in other ways, as Mujāhid and others said. The root of the word for “connection” (<i>sabab</i>) is a rope which is tied to a thing so that it can be pulled. So what pulls a thing into existence is a <i>sabab</i>, which gives the word its usual meaning of means or cause. As-Suddī and Ibn Zayd said, “The means are their actions.”</p>	<p>इससे मुराद दुनिया में उनके बाहमी ताल्लुकात हैं, चाहे वह रिश्तेदारी के ज़रिये हों या दूसरे तरीकों से, जैसा कि मुजाहिद और दूसरों ने कहा है। लफ़ज़ “सबब” (ताल्लुक़) की अस्ल एक रस्सी है जिसे किसी चीज़ के साथ बाँधा जाता है ताकि उसे खींचा जा सके। लिहाज़ा जो चीज़ किसी शै को वजूद में लाने का ज़रिया बनती है वह “सबब” कहलाती है, और इसी से इसका आम मफ़हूम “ज़रिया” या “सबब” बना। अस-सुद्दी और इब्न ज़ैद ने कहा: “ये असबाब दरअसल उनके आमाल हैं।”</p>
<p>those who followed will say, “If only we could have another chance, we would disown them just as they have disowned us.” In that way Allah will show them their actions as a cause of anguish and remorse for them. They will never emerge from the Fire. [2:167]</p>	<p>वह लोग जिन्होंने पैरवी की थी कहेंगे: “काश हमें एक और मौक़ा मिल जाता तो हम भी उनसे बेज़ारी इख़्तियार करते जैसे उन्होंने हमसे बेज़ारी इख़्तियार की है।” इस तरह अल्लाह उनके आमाल को उनके लिए हसरत और नदामत का सबब बना कर दिखाएगा। और वह कभी भी आग से निकल</p>

	नहीं सकेंगे। [2:167]
those who followed will say, “If only we could have another chance,”	वह लोग जिन्होंने पैरवी की थी कहेंगे: “काश हमें एक और मौका मिल जाता,”
The followers claim that they would act righteously if they were given another opportunity. <i>Karrah</i> is a return to a previous state.	पैरोकार यह दावा करेंगे कि अगर उन्हें एक और मौका दिया जाए तो वह नेक अमल करेंगे। क़र्रा का मअनी है किसी पिछली हालत की तरफ़ लौटना।
In that way Allah will show them their actions as a cause of anguish and remorse for them.	इस तरह अल्लाह उनके आमाल को उनके लिए हसरत और नदामत का सबब बना कर दिखाएगा।
As Allah will show them the Fire, so He will also show them their actions which are the cause of their entering it. This is actual seeing with the eye. Ar-Rabī‘ said that these are the corrupt actions which they committed which made the Fire mandatory for them. Ibn Mas‘ūd and as-Suddī said that it refers to the righteous actions which they abandoned and thereby forfeited the Garden. There are many ḥadīths to this effect. As-Suddī said, “They	जिस तरह अल्लाह उन्हें जहन्नम दिखाएगा, उसी तरह वह उन्हें उनके आमाल भी दिखाएगा जो उनके उसमें दाखिल होने का सबब बने। यह आँखों से हक़ीक़ी देखना होगा। अर-रबीअ ने कहा कि इससे मुराद वह बुरे आमाल हैं जो उन्होंने किए थे और जिनकी वजह से उन पर जहन्नम वाजिब हुई। इब्र मसऊद और अस-सुदी ने कहा कि इससे मुराद वह नेक आमाल हैं जिन्हें उन्होंने छोड़ दिया और इस तरह जन्नत से महरूम हो गए। इस मफ़हूम पर बहुत सी अहादीस मौजूद हैं। अस-सुदी ने

<p>will be shown the Garden and will look at it and at their houses there which they would have had if they had obeyed Allah. Those houses will be divided between the believers.” They are called “their” actions because they were commanded to do them. <i>Hasarah</i> (anguish) is the highest degree of regret for something forfeited. It is derived from <i>hasīr</i> (exhausted), which is when something is cut off and its strength gone, like a camel which is completely exhausted. It also means to uncover.</p>	<p>कहा: “उन्हें जन्नत दिखाई जाएगी और वह उसे देखेंगे और अपने वह घर भी देखेंगे जो उन्हें मिलते अगर वह अल्लाह की इताअत करते, फिर वह घर मोमिनों में तक्सीम कर दिए जाएँगे।” इन आमाल को “उनके आमाल” इसलिए कहा गया है क्योंकि उन्हें उनका हुक्म दिया गया था। हसरह (हसरत) किसी खोई हुई चीज़ पर इंतिहाई दर्जे की नदामत को कहते हैं। यह लफ़्ज़ हसीर से माखूज़ है, जिसका मतलब है बिलकुल थक जाना, जैसे कोई ऊँट जो मुकम्मल तौर पर निढाल हो जाए। इसके एक मअनी किसी चीज़ का ज़ाहिर हो जाना या खुल जाना भी हैं।</p>
<p>They will never emerge from the Fire.</p>	<p>वह कभी भी आग से बाहर नहीं निकल सकेंगे।</p>
<p>This is an indication that the unbelievers will be in the Fire forever and never leave it, which is the position of the people of the Sunnah. Allah says: “<i>They will not enter the Garden until a camel goes through a needle’s eye.</i>” (7:40)</p>	<p>यह इस बात की दलील है कि काफ़िर हमेशा के लिए जहन्नम में रहेंगे और कभी उससे बाहर नहीं निकलेंगे, और यही अहल-ए-सुन्नत का मौक़िफ़ है। अल्लाह फ़रमाता है: “वह जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे यहाँ तक कि ऊँट सुई के नाके में दाख़िल हो जाए” (7:40)।</p>